

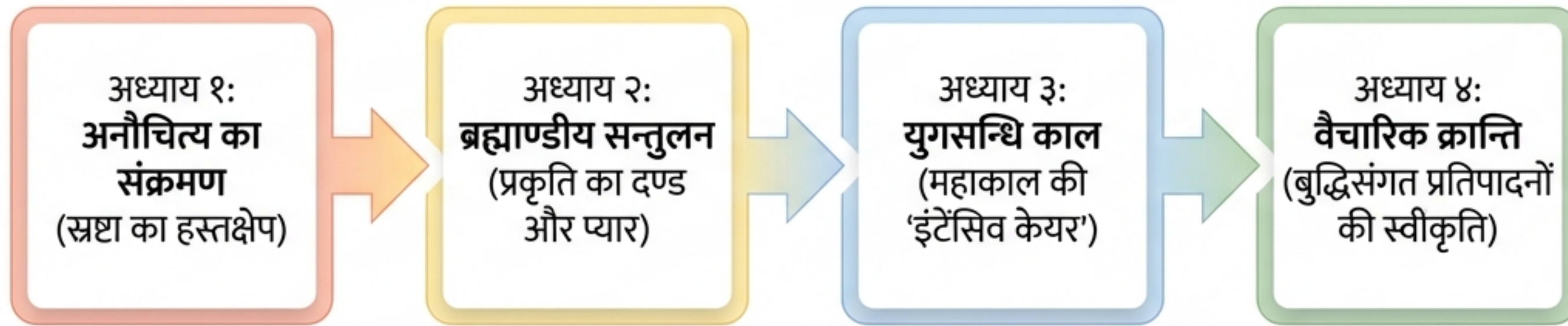


# नवसृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी

युग परिवर्तन का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक ब्लूप्रिंट (अध्याय १-४ का सार-संक्षेप)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

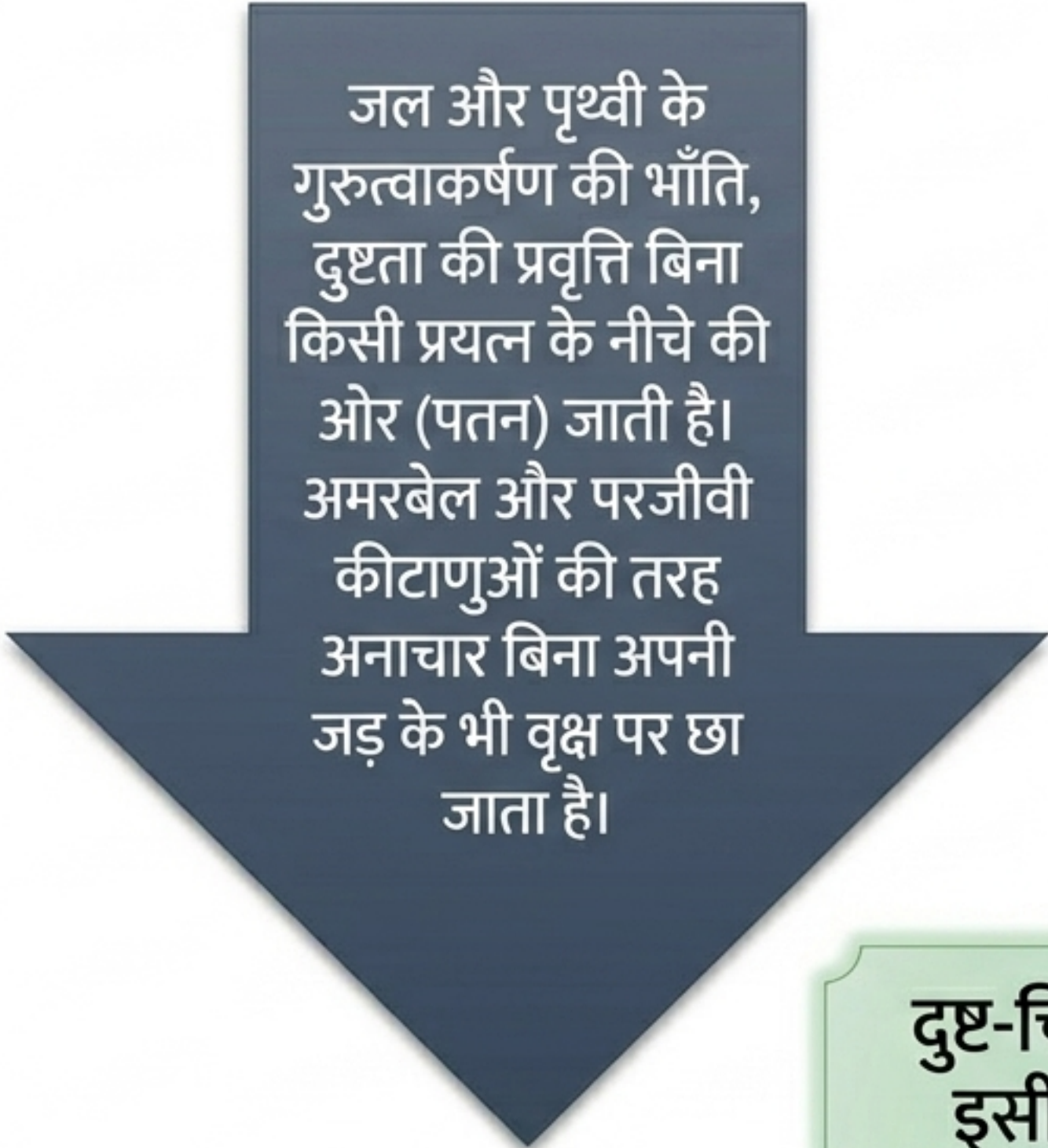
# नवसृजन का महा-प्रवाह



वसन्त पंचमी १९९० को  
वन्दनीया माताजी से —  
“मेरा ज्ञान शरीर ही  
जिन्दा रहेगा। ज्ञान  
शरीर का प्रकाश जन-  
जन के बीच में पहुँचना  
पहुँचना ही चाहिए और  
आप सबसे कहियेगा —  
सब बच्चों से कहियेगा  
कि मेरे ज्ञान शरीर  
को मेरे क्रान्तिधर्मी  
साहित्य के रूप में  
जन-जन तक पहुँचाने  
का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि  
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित  
श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

# पतन का गुरुत्वाकर्षण और अमरबेल का विज्ञान



जल और पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण की भाँति, दुष्टता की प्रवृत्ति बिना किसी प्रयत्न के नीचे की ओर (पतन) जाती है। अमरबेल और परजीवी कीटाणुओं की तरह अनाचार बिना अपनी जड़ के भी वृक्ष पर छा जाता है।



उत्थान के लिए असाधारण और कष्टसाध्य परिश्रम आवश्यक है।

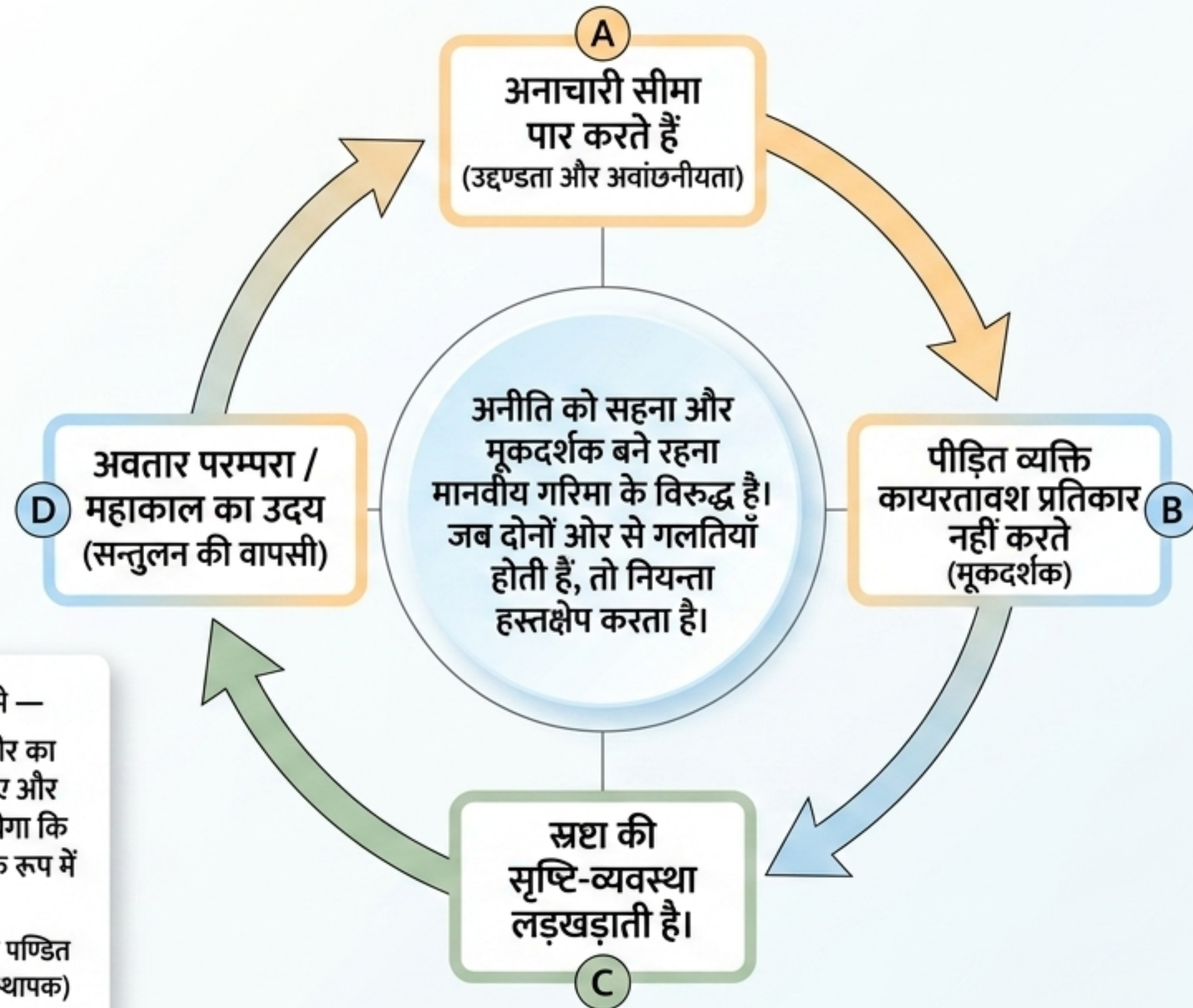
दुष्ट-चिन्तन और भ्रष्ट-आचरण का वर्तमान फैलाव इसी पतनशील गुरुत्वाकर्षण का परिणाम है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्म साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# स्रष्टा का आक्रोश: ब्रह्माण्डीय 'ऑटो-करेक्शन'



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —  
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# वर्तमान युग की सबसे बड़ी गुत्थी: साधन बनाम सदुपयोग

प्राचीन काल:

सीमित साधन + सदुपयोग  
= चैन और हँसी



वर्तमान काल:

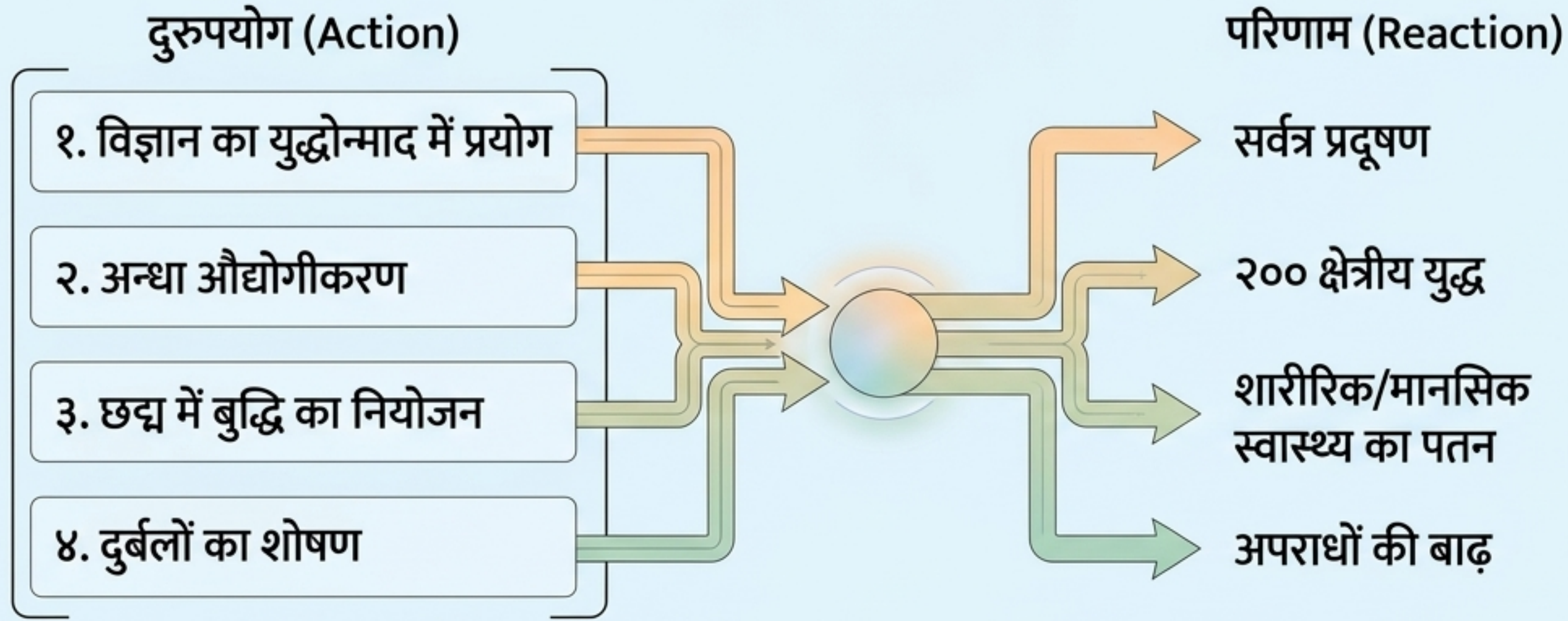
ज्ञान/विज्ञान का बाहुल्य + दुर्बुद्धि/दुरुपयोग  
= खिन्नता, उद्विग्नता और विपन्नता



समस्या वस्तुओं की कमी नहीं है; समस्या उपलब्ध सामर्थ्य का 'अनैतिक नियोजन' है।  
उपलब्धियों का दुरुपयोग ही जन-जन को हैरान किए हुए है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रांति साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”  
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# क्रिया और प्रतिक्रिया: दण्ड का विधान



## Core Scientific Principle Box

प्रकृति अपना हंटर सदा सँभाले रहती है।  
क्रिया की प्रतिक्रिया न हो तो संसार में अन्धेर मच जाए।

वसन्त पंचमी १९९० को  
वन्दनीया माताजी से —  
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा  
रहेगा। ज्ञान शरीर का  
प्रकाश जन-जन के बीच  
में पहुँचना ही चाहिए और  
आप सबसे कहियेगा —  
सब बच्चों से कहियेगा कि  
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे  
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप  
में जन-जन तक पहुँचाने  
का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति  
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा  
आचार्य (गायत्री परिवार के  
संस्थापक)

# महाकाल की दोहरी भूमिका: दण्ड भी और प्यार भी

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” —  
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

## दण्ड (Discipline)

जब मर्यादा का उल्लंघन चरम पर हो।  
महाकाल की प्रताड़ना।  
उद्देश्य: रोगी समाज को कड़वी दवा देकर  
सन्मार्ग पर लाना।

न्यायकारी की नीति केवल डराना है, नष्ट करना नहीं।

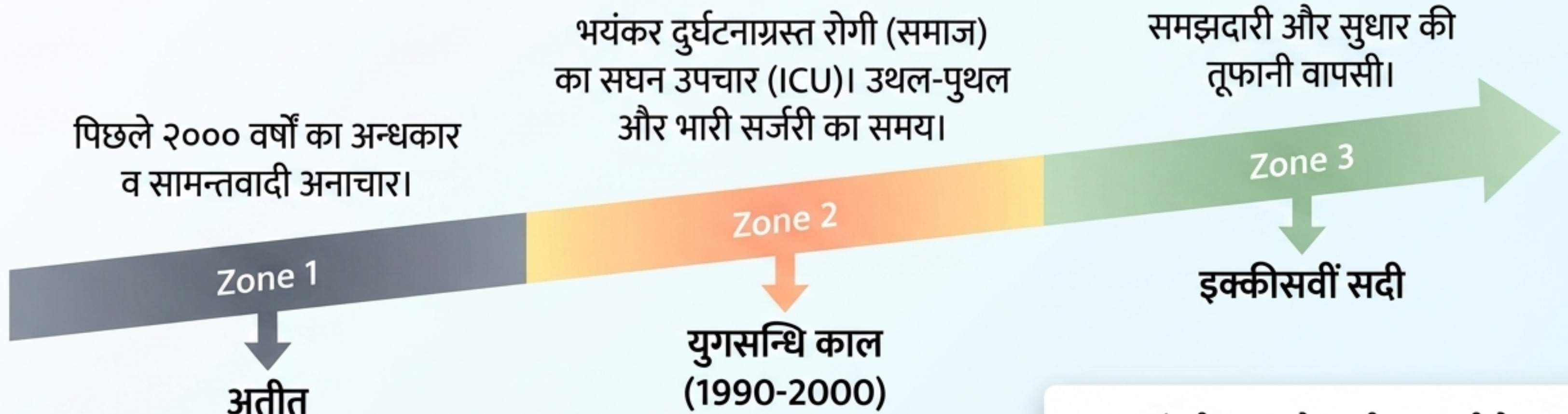
## प्यार (Nurturing)

जब सुधरना आरम्भ हो जाए।  
विश्वकर्मा / पारस / कल्पवृक्ष की भूमिका।  
उद्देश्य: स्वर्ग-सुख और सुखद सम्भावनाओं का  
निर्माण।

जो कार्य प्यार से चले, उसके लिए दण्ड क्यों?

स्रष्टा का उद्देश्य तो मात्र सुव्यवस्था बनाना है। जैसे ही वह बन जाती है, वह अपनी रीति-नीति बदल लेता है।

# युगसन्धि (1990-2000): महाकाल की 'इंटेंसिव केयर' (ICU)



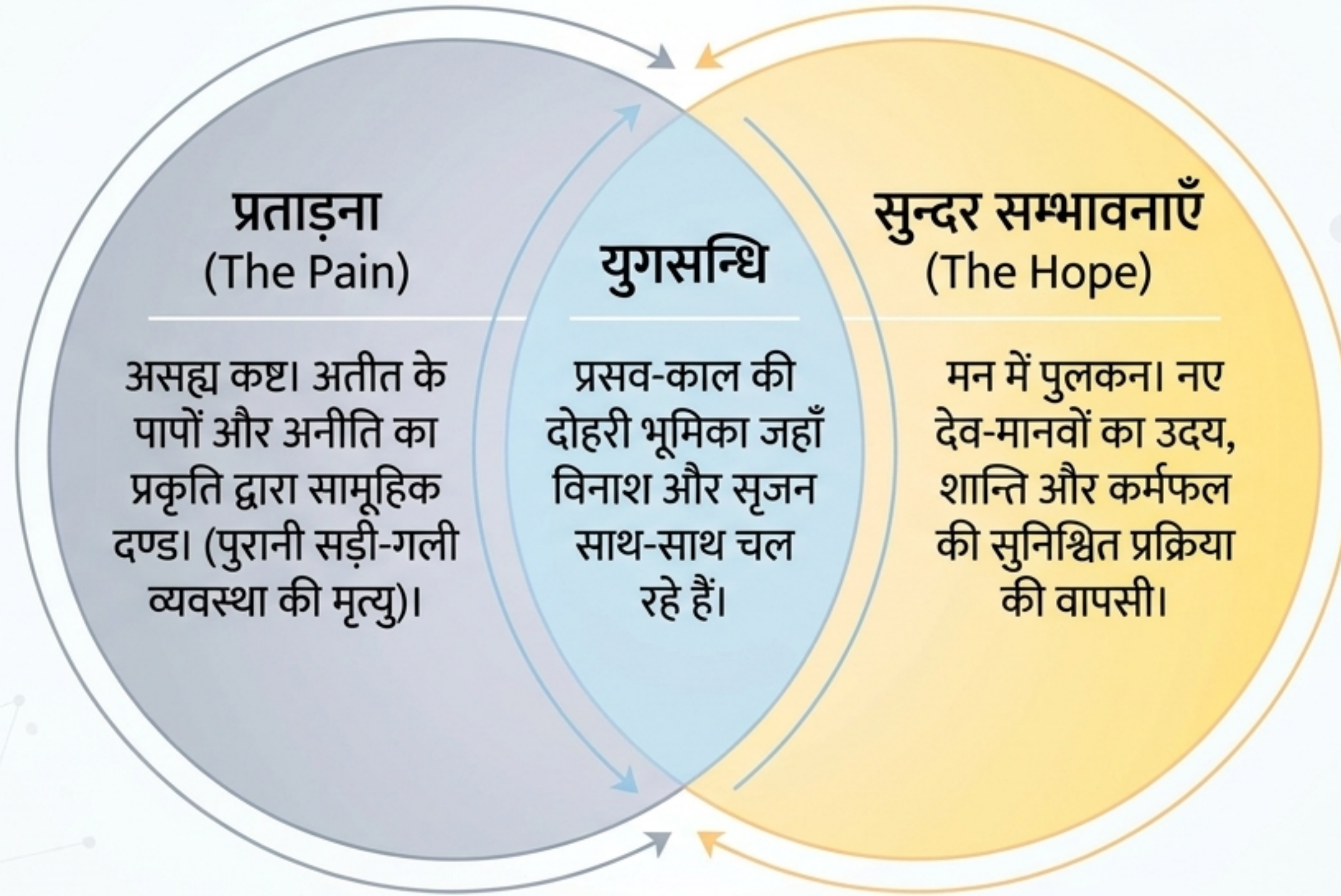
## Diagnostic Note Box

जिस प्रकार भयंकर दुर्घटनाग्रस्त रोगी को उपचार-क्रम में सबसे आगे रखा जाता है ('इंटेंसिव केयर'), उसी प्रकार जहाँ अधिक भयंकर कुसम्भावना रहती है, महाकाल वहाँ पहले हाथ डालते हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —  
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

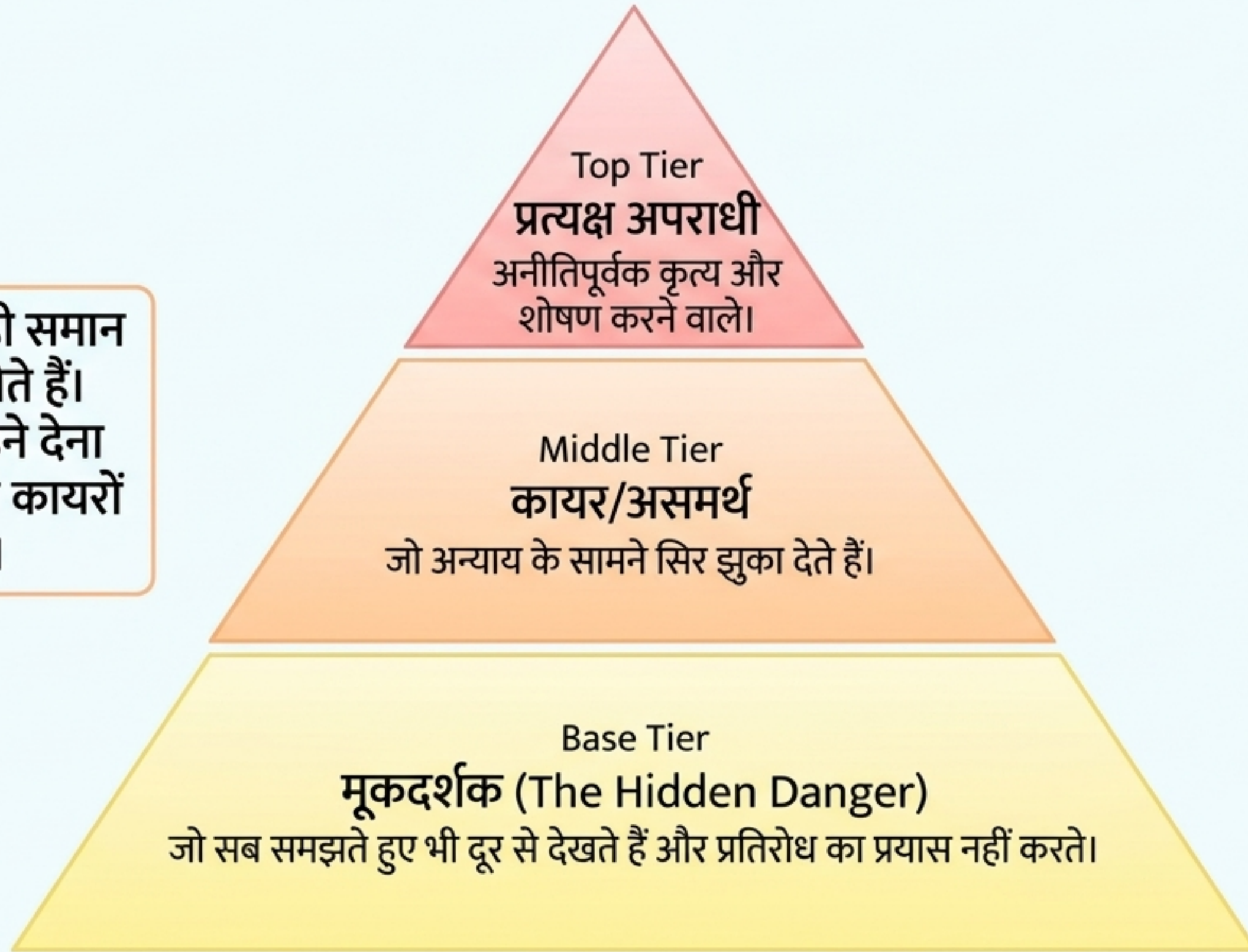
# प्रसव-पीड़ा और नव-सृजन का विज्ञान



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

# न्याय के कटघरे में कौन? (स्रष्टा का 'अकाउंटेबिलिटी' मैट्रिक्स)

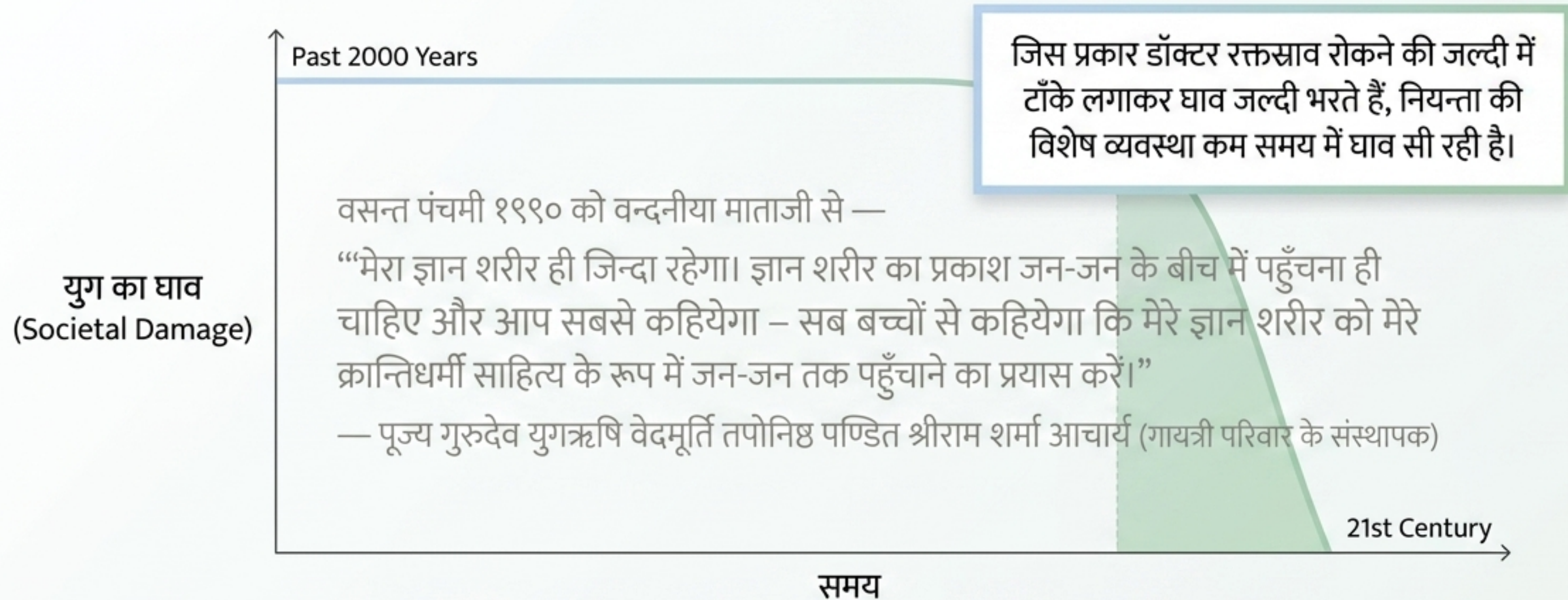
भगवान तीनों पर ही समान  
रूप से नाराज होते हैं।  
बिगड़ते को बिगड़ने देना  
गैर-जिम्मेदारों और कायरों  
का काम है।



वसन्त पंचमी १९९० को  
वन्दनीया माताजी से —  
“मेरा ज्ञान शरीर ही  
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर  
का प्रकाश जन-जन के  
बीच में पहुँचना ही चाहिए  
और आप सबसे कहियेगा  
कहियेगा — सब बच्चों  
से कहियेगा कि मेरे ज्ञान  
शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी  
साहित्य के रूप में जन-  
तक पहुँचाने का प्रयास  
करें।”

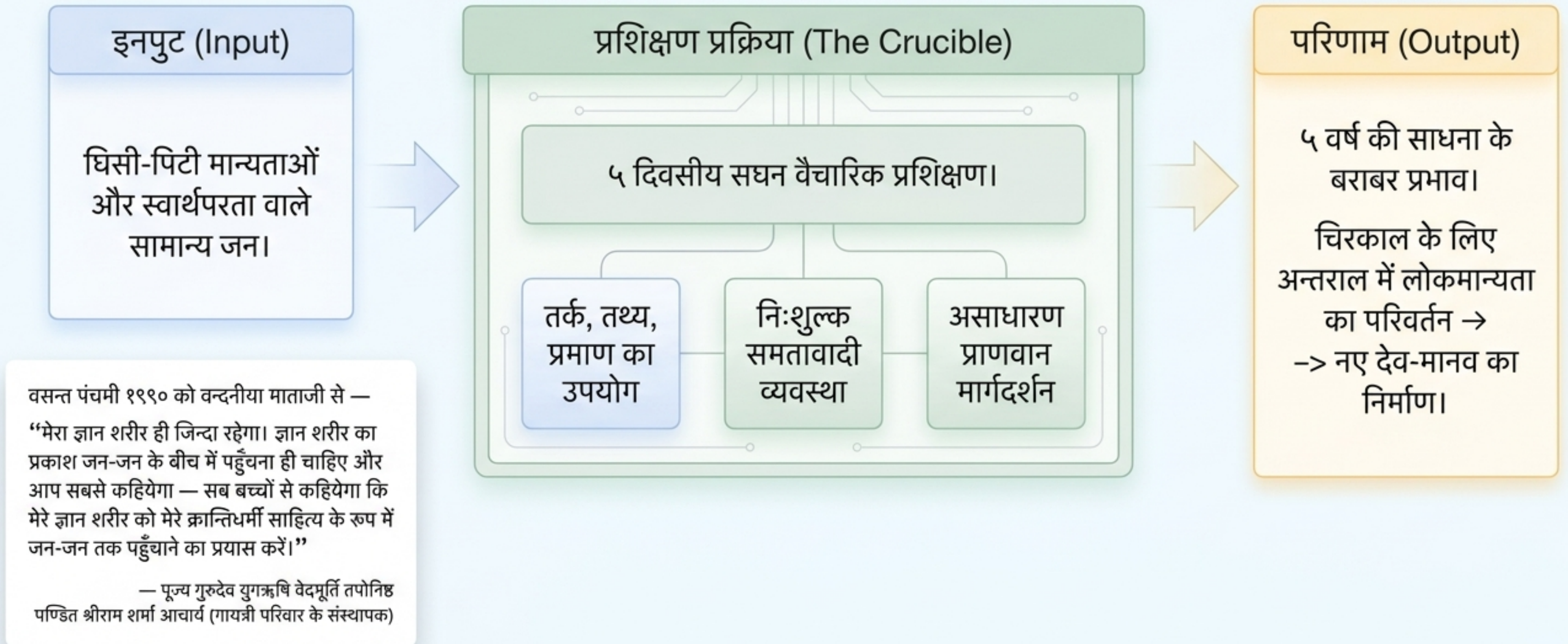
— पूज्य गुरुदेव  
युगऋषि वेदमूर्ति  
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम  
शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

# घाव भरने का तीव्र विज्ञान (Accelerated Healing)



सद्बुद्धि का उद्भव ऐसा है कि समझदारी लौट पड़ने पर कठिन दीखने वाली समस्याएँ बहुत कम समय में सुलझ जाती हैं।

# शान्तिकुञ्ज: नवयुग के अनुरूप प्रशिक्षण की कार्यशाला

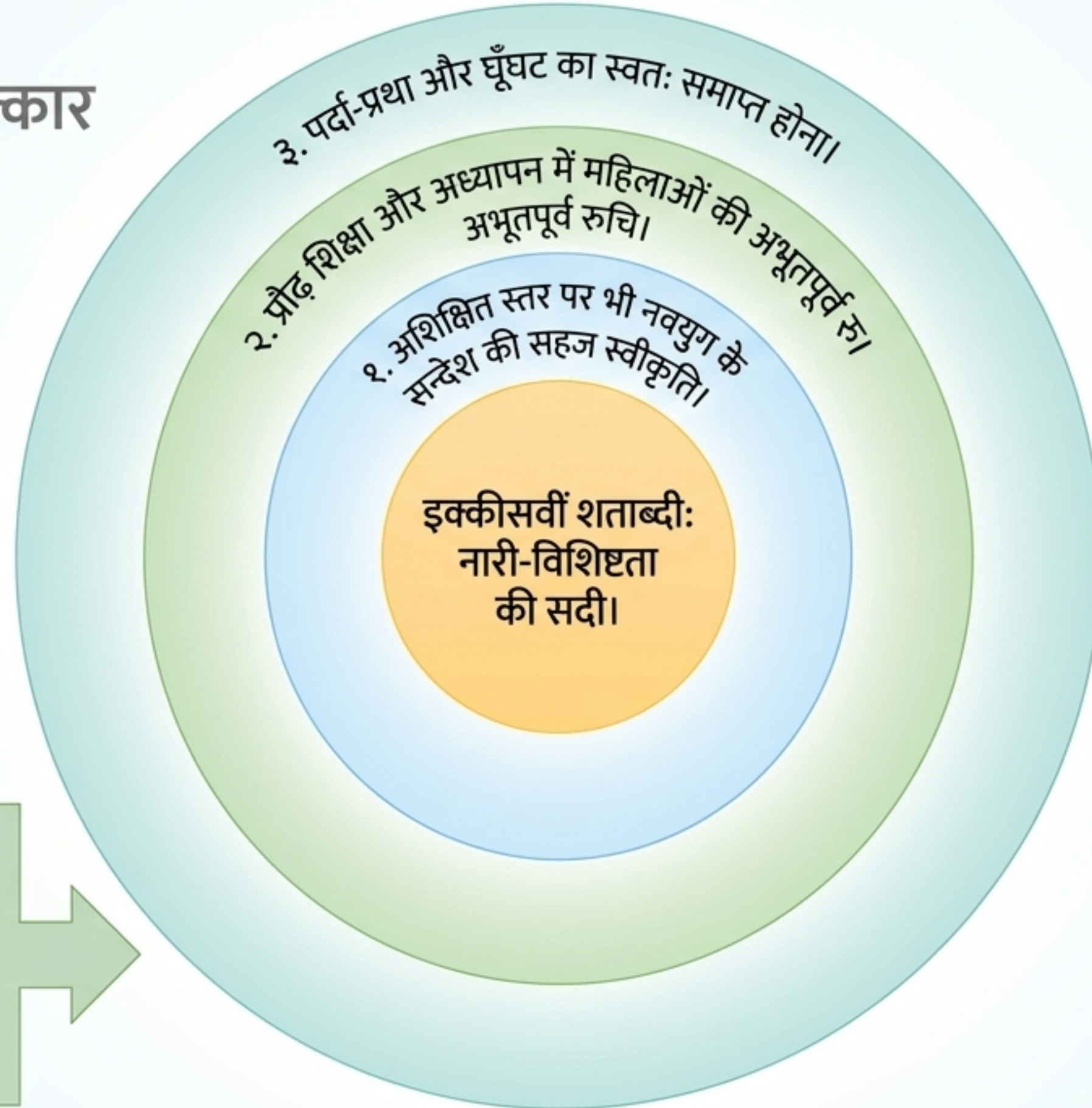


# मानवीय मान्यताओं में क्रान्तिकारी परिवर्तन (The Paradigm Shift)

|                                                                                                                          |                                                                                                                                                                                                                     |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
|  <b>पुरानी मान्यता</b><br>(Obsolete OS) |  <b>बुद्धिसंगत स्वीकृति</b><br>(Upgraded OS)  |
| अनीति और छद्म से वैभव कमाना ही बुद्धिमानी है।                                                                            | भलमनसाहत और नीतिपूर्वक उपार्जन ही स्थाई सुख का आधार है।                                                                                                                                                             |
| घिसी-पिटी और सुनी-सुनाई बातों पर अंधा पूर्वाग्रह।                                                                        | तर्क, तथ्य और प्रमाण आधारित युग-धर्म की सहज स्वीकृति।                                                                                                                                                               |
| आदर्शवादिता अव्यावहारिक है और इसमें घाटा है।                                                                             | उत्कृष्टता की नीति ही वस्तुतः लाभदायक है; सत्य ही चिरस्थायी है।                                                                                                                                                     |

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” —  
पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

## प्रत्यक्ष प्रमाण: नारी जागरण का चमत्कार



जहाँ दुस्साहसपूर्ण बड़े प्रयास भी सफल नहीं होते थे, वहाँ यह स्वतः परिवर्तन सिद्ध करता है कि इस क्रान्ति के पीछे एक महान अदृश्य शक्ति (महाकाल) कार्य कर रही है।

वसन्त पंचमी १९९० को  
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव  
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ  
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य  
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

# नवसृजन में आपकी भूमिका: **ब्रह्माण्डीय विधान** से कैसे जुड़ें?



चिन्तन परिष्कार  
(दुर्बुद्धि का परित्याग और  
सद्बुद्धि की वापसी)।



मूकदर्शक न बनें  
(अनौचित्य का बौद्धिक और  
वैचारिक प्रतिकार)।



ज्ञान-यज्ञ में आहुति  
(समय की पुकार को समझें और  
क्रान्तिधर्मी विचारों का प्रसार करें)।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)